[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3267

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

# पर्यावरण संरक्षण एवं हिन्दू धर्म

**ममता कोठारी**
शोधार्थी शिक्षा, अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर

पर्यावरण के अन्तर्गत वायु जल भूमि वनस्पति पेड़ पौधे, पशु मानव सब आते है । प्रकृति में इन सबकी मात्रा और इनकी रचना कुछ इस प्रकार व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक संतुलनमय जीवन चलता रहे । विगत करोंड़ों वर्षो से जब से पृथ्वी मनुष्य पशुपक्षी और अन्य जीव–जीवाणु उपभोक्ता बनकर आये तब से, प्रकृति का यह चक्र निरंतर और अबाध गति से चल रहा है । जिसको जितनी आवश्यकता है व प्रकृति से प्राप्त कर रहा है और प्रकृति आगे के लिये अपने में और उत्पन्न करके संरक्षित कर लेती है । मानव इतिहास का अवलोकन करे तो आज से पॉच सौ सात सौ वर्ष पूर्व मनुष्य प्रकृति के समीप था । प्रकृति से मिले भोजन पर सामान्य आश्रित था , वह उसका सुखमय जीवन था, जब जल वायु निरापद थे । लेकिन धीरे–धीरे समय के साथ परिवर्तन हुवा और मनुष्य में सुखमय जीने की लालसा में वृद्धि हुई । विज्ञान की प्रगति के साथ मनुष्य ने प्राकृतिक चक्र में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया । इसका दूष्प्रभाव यह हुवा कि मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं की वस्तुऐं जल, वायु भोजन का अभाव होने लगा । प्रकृति के अपार भण्डार दिन प्रतिदिन कम होने लगे और प्रदुषण शब्द का उदय हुवा । पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता होने लगी ।

पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण हेतु सदियों से हिन्दू धर्म अति संवेदन शील रहा है हिन्दू धर्म के इतिहास में वनस्पति वन्य, जीव, वायु, जल, आकाश, अग्नि का ही उल्लेख नही बल्कि इनका उचित प्रयोग एवं उनसे होने वाले अप्रत्यक्ष लाभों का भी विवरण मिलता हैं । हिन्दू धर्म का यही उद्देश्य है कि प्रकृति का पूजन करो एवं उसे संरक्षित करो । विश्व की कुल आबादी के लगभग 13 प्रतिशत व्यक्ति हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं । उनसे सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद और उपनिषद हैं । इनमें जगह–जगह प्रकृति और प्रकृति से विरासत में मिली सभी वस्तुओं का जीवन से गहरा जुड़ाव मिलता है और इन सभी को अत्यन्त पवित्र मानकर लोग इनकी पूजा अर्चना करते हैं । ऋग्वेद के पहले का आर्यावर्त प्रकृति की शक्तियों का खोजी था । उन्होंने वायु को पिता, भाई और मित्र बताया । वायु का अमरतत्व आक्सीजन है । ऋषि ने इसे नष्ट न करने की प्रार्थना की । ऋग्वेद के दशवें मण्डल में धरती की रक्षा के लिए वायु और जल के साथ औषधियों, नदी, वन, पर्वत की सुरक्षा का आवाहन है । ऋग्वेद में ओजोन परत के लिए स्थविर 'महतउल्ब' शब्द है । यह परत पृथ्वी की संरक्षक है । 'पृथ्वी माता, आकाश पिता' यह स्थापना ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में भी है । चेतावनी है कि इन संरक्षकों को आदर दें । पृथ्वी मॉ दुःखी न हों, हमें कष्ट न दें । ऋग्वेद की परम्परा आगे भी चली। यजुर्वेद में 'हे पृथ्वी समुद्र तेरा बध न करें ' कहकर पर्यावरण प्रदूषण की सुनामी जैसी आपदाओं से बचने की प्रार्थना है । जल संरक्षण, नदी प्रार्थना और वन संरक्षण ऋग्वेद से भरा पड़ा है । मसलन वनस्पतियॉ उपकार हैं । पीपल देवसदन हैं । वनस्पतियों का संरक्षण कर्तव्य है । ये नही तो जीवन नहीं । वैदिक विज्ञानियों ने द्युलोक (आकाश) को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ विधि खोजी । द्युलोक वर्षा करते हैं । पृथ्वी मॉ तृप्त होती है । यज्ञ अग्निहोत्र है । अग्निहोत्र एक विशेष रासायनिक तकनीकी है । अग्निहोत्र के जरिए वायुमण्डल को खतरनाक गैसों के मध्य आक्सीजन और कार्बन डाई आक्साइड का संतुलन बनाया जाता है।

प्रकृति एक स्वचलित व्यवस्था है कि प्रत्येक तत्व विघटित होकर अपने मूल में मिलता है । ऋग्वेद के अनुसार आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी पंच तत्व हैं, जिनसे ही प्राणीमात्र को जीवन मिलता है और मृत्यु के बाद वह जीवन इन्ही में विलीन हो जाता हैं मृत्यु उपरान्त मनुष्य का आकाशतत्व आकाश से, प्राणतत्व वायु से, तेजतत्व अग्नि से, जलतत्व जल से और पृथ्वीतत्व पृथ्वी से मिलता है । इनके अतः यह तत्व स्वीकार किया

गया है कि व्यक्ति किसी नदी में स्नान करने से पूर्व उसके जल को नमन करता है, स्नान करते समय मंत्रोच्चारण से उसकी पूजा अर्चना करता है और अत्यन्त श्रद्धा से आचवन कर अपना जीवन धन्य समझता है और उसकी यह भी मान्यता है कि जल के स्पर्श मात्र से दैविक शक्ति उसकी रक्षा करेगी । ऋग्वेद में इसका उल्लेख कुछ इस प्रकार दिया है–

**''आकाश के पानी, नदी और कुओं के पानी, जिनका स्त्रोत सागर है, यह सब पवित पानी मेरी रक्षा करें''**

–ऋग्वेद 7.4,9.2

वनस्पति और पेड़–पौधों के महत्व को हिन्दू धर्म में बहुत मान्यता दी है और किसी न किसी प्रकार हर पेड़ को किसी देवी–देवता अथवा मान्यता से जोड़कर उसकी रक्षा करने का उपाय कालान्तर से बनाये रखा है । वैज्ञानिक दृष्टि से जो महत्व आज वृक्षों का बताया जाता है और जिस वस्तुनिष्ठ आधार पर उनकी रक्षा करने पर बल दिया जाता है। वट, तुलसी, सोम, बेल, अशोक, आम, कदम, नीम, पलाश, पीपल, महुवा, सेमल, गूलर आदि पूजनीय बताये गये है जिसमे विभिन्न देवताओं का वास माना जाता है ।

हिन्दुओं के मान्य ग्रन्थ 'वराह पुराण' में वृक्षों के महत्व को निम्न प्रकार बताया है –

**''एक व्यक्ति जो एक पीपल, एक नीम, एक बड़, दस फूल वाले पौधे अथवा लताएँ, दो, अनार, दो नारंगी और पॉच आम के वृक्ष लगाता है, वह नरक में नहीं जायेगा '' ।**

–वराह पुराण 172.39

पशुओं और पक्षियों की रक्षा हेतु उन्हें पालना, भोजन खिलाना और उन पर किसी अत्याचार की आशंका को जड़ से हटाने के उद्देश्य से प्राचीन काल से ही हिन्दू धर्म में बड़ी सुंदर व्यवस्था की गई है । इसी प्रकार शेर, कलहंस, हाथी, नादिया, चूहा, हंस, गरूण, बन्दर, घोड़ा, मोर, उलूक, गिद्ध, चीता, कुत्ता, हिरण, गधा यह सभी देवी देवताओं के वाहन माने गये है । अनेक देवी–देवताओं से इनको जोड़ना भी इसी क्रम में आंका जा सकता है कि पुराने लोगों को सभी पशु और पक्षियों के प्रति अत्यन्त लगाव रहा है और जिससे निःसन्देह प्रकृति का संतुलन व्यवस्थित हुआ है ।

यही नहीं बल्कि पुराने ग्रन्थों में प्राकृतिक प्रदूषण फैलाने को रोकने तथा दोषी को दण्ड देने की व्यवस्था का विवरण भी कई स्थानों पर मिलता है ।

**''किसी भी व्यक्ति को पानी में पेशाब, मल अथवा थूकना नहीं चाहिये । किसी भी वस्तु को, जो इन अपवित्र वस्तुओं, रक्त और विष से मिश्रित हो, जल में फेंकना नहीं चाहिये। ''**

– मनुस्मृति 4.56

**''व्यक्ति जिसने शहर के अन्दर बिल्ली, कुत्ता, नेवला और सॉप जैसे जीव के लोथ अथवा कंकाल को फेंका तो उसे तीन पाना का दण्ड दिया गया थाः गधा, ऊँट, खच्चर और नर कंकाल फेंकने वाले को पचास पाना का जुर्माना किया गया था ।''**

–कौटिल्य अर्थशास्त्र 2.145

विश्व का प्रत्येक व्यक्ति शांति चाहता है । शांति प्रकृति से लड़कर नहीं मिलती । भारत के प्रत्येक मंगल मुहूर्त में पढ़ा जाने वाला शांतिमंत्र पृथ्वी के संगठन तत्वों के प्रति सचेत श्रद्धाभाव की अभिव्यक्ति है । यजुर्वेद में प्रार्थना है, 'पृथ्वी और अंतरिक्ष शांत हो, औषधियॉ और वनस्पतियॉ शांत हों । सर्वत्र सब कुछ शांत हो ।' आज पृथ्वी अशांत है । जल अशांत है । वन–उपवन अशांत है । पर्यावरण पर आगे बनने वाली विश्व नीति में हिन्दूधर्म ही योग दे सकता है । इससे यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म पर्यावरण के संरक्षण हेतु और उसे विकृति से बचाने हेतु कितना जागरूक था ? और उसमें कितनी रूचि रखता था ?

***सन्दर्भ***

1. *गोयल, एम.के. पर्यावरण शिक्षा , विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ,2005.*
2. *सिंह, भोपाल. पर्यावरण अध्ययन , लॉयल बुक डिपो मेरठ, 2005 .*
3. *शर्मा, मंजू एवं चौहान, राजेश कुमार . पर्यावरण शिक्षा , शिक्षा प्रकाशन जयपुर, 2006.*
4. *शर्मा ,आर.ए. पर्यावरण शिक्षा , आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2005 .*
5. *शर्मा ,लोकेश . पर्यावरण शिक्षा (विज्ञान) एवं उसका शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2005*